फरीदाबाद

मजदूर समाचार

मजदूरों के अनुभवों व विचारों के आदान-प्रदान के जरियों में एक जरिया

नई सीरीज नम्बर 95 मई 1996

19 मई को सुबह दस बजे, 20 को शाम 5 बजे और 21 मई को रात 8 बजे इस अखबार के मई अंक पर मजदूर लाइब्रेरी, आटोपिन झुग्गी में चर्चा होगी। हर कोई इसमें भाग ले सकता है।

मजदूरों के विरोध व संघर्ष के दो रुप

चूँ - चूँ का मुरब्बा

निजी स्तर पर मैनेजमेन्ट का विरोध करना जहाँ हर वरकर की मजबूरी है वहीं मैनेजमेन्ट का सामुहिक विरोध करना प्रत्येक मजदूर की आवश्यकता है। अपने बचाव के लिये प्रत्येक वरकर इतने पापड़ बेलता है कि हम में से हर एक की कहानी के समक्ष विगत की महागाथायें बौनी हैं। मजबूरी का चाबुक तो हमें हाँकेगा ही, आवश्यकता को आविष्कार की जननी भी कहते हैं न इसलिये आइये सामुहिक विरोध–सामुहिक संघर्ष के मसले पर ध्यान दें—– क्या पता नये समाज का आविष्कार–रचना–सृजन हो जाये और हम पापड़ बेलने से मुक्त हो जायें !

समूह बल को भुनाने में चाँदी ही चाँदी है। समूह की नकेल थामने के लिये, बल्कि अधिक सटीकता से कहें तो समूह की नकेल किसी के हाथ में होने का भ्रम पैदा करने के लिये, यानि लीडरी के लिये फैक्ट्री के, पँचायत–नगर निगम के, असेम्बली–संसद के चुनावी समुद्र मन्थनों के हम सब अभ्यस्त हो गये हैं, आदी हो गये हैं। यह तो रेडियो–टी वी–अखबार–पत्रिकायें, यानि मीडिया है कि लीडरों की बातों को अनन्त दोहराता रहता है..... मन्त्रोच्चार की यही खूबी है पर यहाँ यह हमारी विषय–वस्तु नहीं है। मजदूरों के सामुहिक विरोधों, सामुहिक प्रतिरोधों, सामुहिक संघर्षो के बारे में आमतौर पर मीडिया चुप्पी साधे रहता है। कभी–कभी मीडिया बाल्मिकी की तरह घास–फूस से कुश पैदा कर चमत्कार करता है—– जहाँ लीडर होते नहीं हैं वहाँ लीडरों की रचना करता है। और, जब मीडिया महर्षि बाल्मिकी नहीं बन पाता, नेता पैदा नहीं कर पाता लेकिन चर्चा करने की मजबूरी होती है तब सामुहिक विरोध–प्रतिरोध–संघर्ष को चूँ–चूँ का मुरब्बा करार दे कर उन्हें महत्वहीन बनाने के प्रयास करता है। नेतृत्वहीन दिशाहीन होते हैं ; कानून–कायदे–संविधान के दायरे से भीड़ बाहर होती है ; समूह के बीच से लीडर उभरें तो बात बने और उनसे सार्थक संवाद हो सकता है ; अन्यथा इस चूँ–चूँ के मुरब्बे को दफना दो, सामुहिक कदमों को कुचल दो–कुचल दो, मजदूरों को सीधा कर दो की धीर–गम्भीर बातें करते समय मैनेजमेन्टों के, सरकारों के मुँह में झाग आ जाते हैं तथा उनके स्पीकरों का जनतन्त्र–जनवाद हकलाने लगता है। और, सामुहिक कदम जिन्हें कि मैनेजमेन्टें चूँ–चूँ का मुरब्बा कहती हैं, वे ही मजदूरों का खोज–अन्वेषण–रिसर्च–आविष्कार–रचना–सृजन का क्षेत्र है।

फैक्ट्रियों के दायरे में बात करें तो मजदूरों के सामुहिक विरोध-प्रतिरोध-संघर्ष का एक जीवन्त बिन्दु, ज्वलन्त स्थान डिपार्टमेन्ट की शिफ्ट होती है। रोज का तालमेल और हकीकत से पड़ता वास्ता मैं–मैं–मैं की शिक्षा–दीक्षा की घुट्टी को थुकवाता रहता है। फैक्ट्री में एक डिपार्टमेन्ट की एक शिफ्ट के वरकर मैनेजमेन्टों के कम लागत पर अधिक प्रोडक्शन लेने के मूल सूत्र का स्वाभाविक तौर पर सामुहिक विरोध–प्रतिरोध करते हैं तथा अपने बोझे को कम करने, राहतों को बढवाने व वेतन वृद्धि के लिये सामुहिक संघर्ष करते हैं। डिपार्टमेन्ट अथवा सैक्शन में शिफ्ट के आधार पर मजदूरों द्वारा स्वयं उठाये जाते कदमों की संख्या असंख्य है ! **हर रोज और हर जगह वरकर बिना किसी के पीछे चले, बिना किसी को बिचौलिया बनाये, बिना किसी को लीडर बनाये, बिना किसी को नुमाइन्दा या प्रतिनिधि बनाये खुद ही मैनेजमेन्टों के खिलाफ संघर्ष करते हैं।** मजदूरों के सामुहिक कदम आमतौर पर इतने छोटे होते हैं कि कमजोर से कमजोर वरकर भी राजी से इनमें शामिल होते हैं :

- सुपरवाइजर–फोरमैन–मैनेजर से बात नहीं करना, दुआ–सलाम तक बन्द कर देना ;
- त्यौहारों पर मैनेजमेन्ट की शुभकामनायें लेने से इनकार करना और उपहार लौटा देना ;
- इकट्ठे हो कर मैनेजर के पास जाना ;
- 25 मजदूरों द्वारा साहब से एक ही समय 36 जबानों में बात करना ;

(बाकी पेज तीन पर)

हो सा - हाँ जी - यस सर

कूनो–कुंवारी–चम्बल के जँगलों में रहते किसी गरीब को कोई ठेकेदार, कोई बोहरा यानि सम्पन्न व्यक्ति कुछ भी करने को कहता तो उसका एक ही उत्तर होता, "हो सा"। 17–18 साल पहले उन गरीबों से निकट के रिश्ते होने की वजह से यह पता था कि हाँ कहने वाले व्यक्ति के लिये कहे काम को करना कष्टदायक था और उसका वह काम करने का कोई इरादा भी नहीं होता था। अकेले में बात होने पर यह बुद्धु पूछता कि उन्होंने करना ही नहीं है तो मना क्यों नहीं करते, फालतू में झूठ क्यों बोलते हैं ? माट्टर को जवाब में वे गरीब मुस्कुरा देते थे। और, किसी अन्य गरीब के बारे में कोई बोहरा किसी गरीब से कुछ भी पूछता तो वह गरीब अनजान बना रहता था।

फैक्ट्रियों में मैनेजमेन्टों की ताकत किसी भी बोहरा से हजारों–लाखों गुणा ज्यादा है। जैसे–तैसे करके गुजारा करने के लिये फैक्ट्री मजदूर के पास जँगल की लकड़ी, शिकार, शहद, कन्द–मूल, फल–फ्रूट भी फ्री के नही हैं। और फिर, कैजुअलों व ठेकेदारों के वरकरों का तो कहना ही क्या, परमानेन्ट मजदूरों के सिर पर भी स्टैन्डिंग आर्डर की चार्जशीट– सस्पैन्ड – डिसमिस की तलवार हर समय लटकती रहती है। अलग–अलग करके हर प्रकार के फैक्ट्री वरकर की स्थिति जँगलों के गरीबों से भी कमजोर होती है। ऐसे में फैक्ट्री मजदूरों को सच बोलने की सलाह या तो कोई महाबुद्धु दे सकता है या फिर सत्यमेव जयते के ठप्पे लगा कर झूठ का व्यापार करने वाले।

अकेले–अकेले किसी फैक्ट्री वरकर का मैनेजमेन्ट से, सुपरवाइजर–फोरमैन–मैनेजर से अथवा किसी लीडर से जब पाला पड़ता है तब जँगल के गरीब की तरह हो सा– हाँ जी– यस सर–यस मैडम मजदूर की पहली ढाल है। संविधान के तहत बने कानून कहते हैं कि आप अपने अधिकारियों के आदेश मानने से इनकार नहीं कर सकते इसलिये अच्छे नागरिक की तरह साहबों की हर बात पर मजदूर को यस सर–यस

(बाकी पेज तीन पर)

मजदूर लाइब्रेरी, आटोपिन झुग्गी, एन. आई. टी. फरीदाबाद-121001 (यह जगह बाटा चौक और मुजेसर के बीच हैं)

उँगलियाँ खा कर नौकरी खाई

उमेश कुमार ने बताया, " 10 जनवरी को पावर प्रेस में मेरी दो उँगलियाँ कट गई और एक कुचली गई। ई एस आई में इलाज हुआ। डॉक्टर ने 9 अप्रैल को फिटनेस दिया। 10 को मैं ड्युटी पहुँचा तो मैनेजमेन्ट ने फिटनेस सर्टीफिकेट ले कर मुझे ड्युटी पर ले लिया पर तीन घन्टे बाद मैनेजर ने अपने दफ्तर में बुलाया और मुझे इस्तीफा लिखने को कहा। मैंने रिजाइन करने से इनकार कर दिया तो मैनेजर ने मुझे फैक्ट्री से निकाल दिया। तब से मैनेजमेन्ट कहती है कि इस्तीफा लिखो और फिर ड्युटी करो।"

उमेश कुमार **एस. ए. आटो प्रा. लि.** , प्लाट 219 सैक्टर–24 का मजदूर है। इस फैक्ट्री में 350 वरकर हैं जिनमें से 35 ही परमानेन्ट हैं – 40 कैजुअल और 270 ठेकेदारों के मजदूर हैं। ठेकेदारों वाले हैल्परों को 850 रुपये और कम्पनी वाले हैल्परों को 800 रुपया महीना वेतन दिया जाता है। फैक्ट्री में 16 पावर प्रेस हैं और उनके आपरेटरों को 1000–1200 वेतन दिया जाता हैं। टूल रुम आपरेटरों को 1500 महीना दिये जाते हैं।■

तीन महीने, तीन नाम

एक कैन्डीडेट के लिए ध्याड़ी पर पर्चे बाँट रहे दो वरकर थोड़ा सुस्ताने के लिये मजदूर लाइब्रेरी में बैठे। इनमें से एक बरसों से बन्द पड़ी एक फैक्ट्री का परमानेन्ट मजदूर था। जगह–जगह कैजुअल वरकर के तौर पर काम कर चुके इस मजदूर ने बताया कि **ओरियन्ट फैन** में 28 दिन के लिये कैजुअल रखते हैं। फिर नाम बदल कर 28 दिन और रख लेते हैं। उसके बाद फिर नाम बदल कर 28 दिन के लिये रख लेते हैं। परन्तु कुल तीन महीने से ज्यादा नहीं रखते। वेतन में से प्रोविडेन्ट फन्ड और ई एस आई के पैसे ओरियन्ट मैनेजमेन्ट काट लेती है पर पर्ची या कार्ड नहीं देती। पी एफ के नाम पर काटा दस परसैन्ट वेतन मैनेजमेन्ट तीन नाम से फन्ड दफ्तर में जमा करती हो तो भी इन पैसों को निकालने के लिये तीन अलग–अलग नाम से बैंकों में खाते खोलने पड़ेंगे। इसलिये ओरियन्ट फैन का कोई कैजुअल वरकर अपने इन पैसों को निकलवाने की कोशिश भी नहीं करता।■

अहितकारी पोट्रीज

वर्किंग कन्डीशन ऐसी हैं कि **हितकारी पोट्रीज** के 80 प्रतिशत स्त्री व पुरुष मजदूर दमा और टी बी के मरीज हो गये हैं। वर्किंग कन्डीशन सुधारने पर एक पैसा भी खर्च नहीं कर रही मैनेजमेन्ट ने प्याली मजदूरों को निचोड़ –निचोड़ कर इन 40 वर्षों में 17 फैक्ट्रियाँ खड़ी कर ली हैं।

37–40 दिन काम करने के बाद 30 दिन का वेतन देने का कानून मजदूरों की तनखा के ही करोड़ों–अरबों रुपये हर समय मैनेजमेन्टों के हवाले रखता है। और फिर, फरीदाबाद में आधी से ज्यादा मैनेजमेन्टें 7 या 10 तारीख से पहले तनखा देने के कानून को खुलेआम तोड़ कर 20 तारीख के बाद वेतन देती हैं। हितकारी पोट्रीज के मजदूरों की भी यह अतिरिक्त तकलीफ है कि उन्हें 37 की बजाय 55–60 दिन काम करने के बाद 30 दिन की तनखा मिलती है। मार्च का वेतन 26 अप्रैल तक प्याली मैनेजमेन्ट ने नहीं दिया था। हितकारी मजदूरों को इस बात पर बहुत गुस्सा आता है कि फीस में देरी पर स्कूलों में उनके बच्चों को खड़ा कर दिया जाता है और दुकानदार डेढे भाव में भी सामान देने मे आनाकानी करते हैं।■

पल भर लेट

अखबार का मार्च अंक बाँटते समय दूसरी दिशा से आये एक मजदूर से बातचीत : " कहाँ काम करते हो ?"

" 24 सैक्टर की सुरभि इन्डस्ट्रीज में ।"

" नाइट ड्युटी करके आये हो क्या ?"

" नहीं । पाँच मिनट लेट हो गया था, मैनेजमेन्ट ने फैक्ट्री गेट से वापस कर दिया।"■

खिसियानी बिल्ली

मन्डी व्यवस्था की खिलाड़ी बाटा कम्पनी की हालत खस्ता है। बौखलाई मैनेजमेन्ट मजदूरों पर खार खा रही है।

बाटा फैक्ट्री में आधे वरकरों का चेन सिस्टम कार्य है। पानी पीने अथवा लैट्रिन–पेशाब करने जाने के लिये रिप्लेसमेन्ट वरकर नहीं हैं। अपनी बगल के वरकर को अपनी भी जॉब सौंप कर मजदूर बाथरुम जाते हैं। जिन वरकरों का चेन सिस्टम नही है वे अपनी रफ्तार बढा कर पानी–पेशाब के लिये टाइम निकालते हैं। इधर जनरल मैनेजर ने एक अन्धेरगर्दी यह शुरु कर दी है कि उसके फैक्ट्री राउन्ड के समय कोई मजदूर पानी–पेशाब के लिये गया होता है तो उसका आधे दिन का वेतन काट लेता है। 16 अप्रैल को साहब ने इस सिलसिले में स्टिचिंग के 45 मजदूरों की आधे दिन की तनखा काटने का फरमान जारी कर दिया। **" पैसे कटने ही हैं तो आधे दिन आराम किया जाये "। स्टिचिंग के 45 मजदूरों को आराम फरमाते आधा घन्टा ही हुआ था कि प्रोडक्शन जाम होने की नौबत आती देख मैनेजमेन्ट ने वेतन काटने का अपना आदेश वापस ले लिया।**

वर्क लोड बढाने के सिलसिले में बाटा मैनेजमेन्ट ने 22 अप्रैल को स्टिचिंग में एक जगह से पाँच वरकर हटा लिये और उनसे जुड़े पाँच मजदूरों से कहा कि वे उन पाँच का भी काम करें। वरकरों द्वारा इनकार करने पर 23 को मैनेजमेन्ट ने आधे दिन की एबसैन्ट लगा दी। 24 को वार्निंग लैटर दिये और 25 अप्रैल को पाँच मजदूर पाँच दिन के लिये सस्पैन्ड कर दिये। पाँच से दस वरकरों का काम करवाने में बाटा मैनेजमेन्ट फिर भी सफल नहीं हुई है।

और, क्वालिटी के लिये स्टिचिंग में मैनेजमेन्ट ने 2800 की जगह 1400 आर पी एम की मोटरें लगाई। रफ्तार आधी कर पहले जितना प्रोडक्शन माँगा और यह नहीं होने पर दो महीने मजदूरों की तनखा काटी। फिर खुद ही बाटा मैनेजमेन्ट ने 1400 वाली हटा कर 2800 वाली मोटरें लगा दी पर वेतन से काटे पैसे वापस नहीं दिये हैं।■

सड़क अलाट करें
नगर निगम से आवेदन

महामहीम,

इन्डस्ट्रीयल एरिया में फैक्ट्री की बगल की सार्वजनिक जमीन पर **आटोपिन मैनेजमेन्ट** ने कब्जा कर लिया और आपके पूर्वज कम्पलैक्स प्रशासन ने साइकिल स्टैन्ड के नाम से वह जमीन मैनेजमेन्ट को अलाट कर दी । इधर आटोपिन मैनेजमेन्ट ने सड़क के दोनों बगल की सार्वजनिक जमीन पर कब्जा कर लिया है। एक तरफ उसने कबाड़े व कच्चे माल के गोदाम के संग–संग वहाँ प्रोडक्शन का काम करवाना आरम्भ कर दिया है और सड़क की दूसरी तरफ वास्तव में साइकिल स्टैन्ड बना दिया है। इतना ही नहीं, आधी सड़क पर भी आटोपिन मैनेजमेन्ट का साल–भर से चौबीसों घन्टे कब्जा रहता है और दिन में कई बार पूरी सड़क मैनेजमेन्ट के कब्जे में होती है। इसलिए अपने पूर्ववर्ती की तरह महामहीम के लिये यह अत्यन्त उचित होगा कि सड़क तथा उसके अगल–बगल की सार्वजनिक जमीन आटोपिन मैनेजमेन्ट को अलाट कर दें।

इसी रोड़ के एक अन्य हिस्से के एक बगल की सार्वजनिक जमीन पर **ईस्ट इंडिया काटन मैनेजमेन्ट** ने लोहे की चद्दरें खड़ी करके अपना गोदाम बना लिया है। सड़क के दूसरे किनारे की सार्वजनिक जमीन अन्य मैनेजमेन्टों ने घेर रखी है इसलिये मजबूरन ईस्ट इंडिया मैनेजमेन्ट को आधी सड़क पर कब्जा रखना पड़ता है। अतः यह विधिसम्मत होगा कि सड़क के 50 गज हिस्से को आप ईस्ट इंडिया मैनेजमेन्ट को अलाट कर दें।

एक छोटा–सा निवेदन और है। प्रेस कालोनी के बगल में इसी सड़क के एक टुकड़े पर बगल के **सार्वजनिक नलके** का बरसों से कब्जा है। सड़क के नाम पर पानी–भरे उबड़–खाबड़ दो गज के टुकड़े को कृपया नलके को अलाट करें। ऐसा करके महामहीम वहाँ सड़क रिपेयरिंग के बरसों से पेन्डिंग काम से भी मुक्त हो जायेंगे।■

तन के बाद मन की बारी

अपनी इनसैन्टिव स्कीमों के जरिये मजदूरों के तन को निचोड़ने में **केल्विनेटर** मैनेजमेन्ट किसी से पीछे नहीं रही है और अब उसने वरकरों के मन निचोड़ने में सहायता के लिये इस क्षेत्र की एक्सपर्ट **आयशर कन्सलटैन्सी** को दो करोड़ रुपये का ठेका दिया है। आयशर मजदूरों की सूचना के अनुसार फरीदाबाद में ही 32 अन्य फैक्ट्रियों में आयशर कन्सलटैन्सी ने ऐसे ठेके लिये हैं। मैनेजमेन्टों के गुरु शीघ्र ही यहाँ मजदूरों को पढे–लिखे बेवकूफ बनाने के लिये बड़े पैमाने पर क्लासें लेना शुरु करेंगे।

डन्डे और इनसैन्टिव के जरिये मजदूरों के तन को पूरा खींच कर आयशर मैनेजमेन्ट 1989 में 1100 मजदूरों से महीने में 1500 ट्रैक्टर का प्रोडक्शन लेने लगी थी। तब जापान–अमरीका में अपने बन्धुओं को देख आयशर मैनेजमेन्ट ने मजदूरों के मन पर रोड़रोलर चलाना आरम्भ किया और 400 वरकरों से महीने में 2000 ट्रैक्टर बनवाने लगी है। तन व मन से बेहाल मजदूरों में उभरते विरोध से निपटने और प्रोडक्शन बढाने के लिये आयशर मैनेजमेन्ट मजदूरों को पाठ पढाने के लिये अमरीका से विशेषज्ञ बुलाती रही है। मजदूरों के मन का कचूमर निकालने में मदद करने के लिये आयशर मैनेजमेन्ट गुरुओं को आने–जाने व रहने–सहने की फाइव स्टार सुविधाओं के संग–संग पाँच हजार रुपये रोज की ध्याड़ी देती है। अब आयशर मैनेजमेन्ट 400 से भी कम मजदूरों से महीने में 2400 ट्रैक्टर बनवाने की फिराक में है।■

अथक प्रयासों से उग आये
धरती के दो हाथ
और दो टाँगें
बैल के सींगों से उतरकर
अपने पैरों पर खड़ी हो गई धरती
बैल बेरोजगार हो गया
आकाश डर गया
लम्बे –लम्बे डग भरती आकाशगँगा में
धरती जा पहुँची
देवताओं की सभा में
बोली
नाचोगे मेरे साथ ?

24. 4. 96 —अनिता

यह भी नहीं रखने, वह भी नहीं रखने

इन्टर करके बिहार से यहाँ पहली बार आये और डेढ महीने से नौकरी के लिये दर–दर भटक रहे युवा ने पत्र में अपनी पीड़ा व्यक्त की है और घुट्टी के समय से जो शिक्षा–दीक्षा दी जा रही है उसे उगला है। वर्कशॉपों में उससे परिचय वाला माँगते हैं तो फैक्ट्रियों में कहीं–कहीं कहते हैं कि बिहारी नहीं रखना। फरीदाबाद में कोई मैनेजमेन्ट लोकल यानि हरियाणावाले के नाम से बिदक जाती है तो कोई बिहारी के नाम पर, कोई मैनेजमेन्ट गढवाली के जिक्र पर उखड़ जाती है तो कोई नेपाली कहने पर। नौकरी के लिये भटक रहों पर अपनी ऐसी भड़ास मैनेजमेन्टें खुलकर निकालती हैं। थोड़ी–बहुत इसमें साजिश भी होती है पर आमतौर पर यह मैनेजमेन्टों के पूर्वाग्रहों के चूर–चूर होने की खनक मात्र हैं।

कई मैनेजमेन्टें हरियाणावालों को कद–काठी और संस्कार से मेहनती मान कर भर्ती करती हैं ; कई मैनेजमेन्टें बिहारियों को परदेसी और भूखे मान कर कम पैसे में चुपचाप काम करने वालों के तौर पर भर्ती करती हैं; कई मैनेजमेन्टें गढवालियों को पहाड़ी भोलेपन और पहाड़ी टट्टू होने के आधार पर भर्ती करती हैं ; कई मैनेजमेन्टें नेपालियों की पहाड़ी–परदेसी–सस्ते–बहादुर के आधार पर भर्ती करती हैं ; ....

फैक्ट्रियों में मजदूरी करना शीघ्र ही हरियाणवी–मद्रासी–बँगाली –बिहारी–नेपाली–पँजाबी के भेदों के सतही होने, थोथे होने की तस्दीक कर देता है। मजदूरों के विरोध देर–सबेर मैनेजमेन्टों के पूर्वाग्रहों को चकनाचूर कर देते हैं और बौखला कर वे कहती हैं : यह नहीं रखने, वह नहीं रखने..........बेचारी मैनेजमेन्टें ! **फैक्ट्रियों में तो रोबोट भी बागी हो जाते हैं।**■

हाजरी भी खा जाना

कटिंग प्रेस, पंचिंग प्रेस, रोलर, भट्टियाँ, गर्म तेल के टैंक, वैल्डिंग, ड्रिल मशीनें, ग्राइन्डर, स्प्रे मशीनें ...... 16, इन्डस्ट्रीयल एरिया स्थित **आटोपिन फैक्ट्री** में काम कर चुके एक मजदूर के मुताबिक इस फैक्ट्री में हर जगह, टोटल फैक्ट्री में खतरा रहता है। और, आटोपिन में काम कर रहे 400 से ऊपर कैजुअलों व ठेकेदारों के मजदूरों में से एक को भी मैनेजमेन्ट ने ई एस आई कार्ड नहीं दिया हैं। तनखा तो 20 तारीख के बाद देते ही हैं, कैजुअलों व ठेकेदारों के वरकरों को सबसे ज्यादा तकलीफ मैनेजमेन्ट द्वारा उनकी हाजरियाँ खा जाने से है। एक तिहाई हाजरी खा जाना तो आटोपिन में अक्सर होता है, जब–तब मैनेजमेन्ट आधी हाजरियाँ तक खा जाती है। कोई मजदूर अपनी हाजरियों के पूरे पैसे माँगता है तो बाद में आने को कहते हैं और उनके बाद का मतलब होता है कभी नहीं — इसलिए वरकर तभी पूरे पैसे देने की बात कहता है जिस पर आटोपिन मैनेजमेन्ट के लोग उसे धमका कर व धक्के मार कर भगा देते हैं।■

चूँ - चूँ का मुरब्बा (पेज एक का शेष)

● साहबों या लीडरों द्वारा अलग–अलग से बुला कर पूछताछ करने पर चुप रहना या फिर हाँ जी–ना जी –पता नहीं जी कहना ;

● साहब कुछ कहें तो उन्हें मना नहीं करना पर करना उतना ही और वैसे ही जैसे आपस में मिलकर तय किया है ;

● मैनेजमेन्ट को प्रोडक्शन की अरजेन्ट जरुरत हो तब एक साथ छुट्टी कर लेना ;

● मैनेजमेन्ट को प्रोडक्शन की ज्यादा जरुरत हो तब नियमानुसार सामान्य प्रोडक्शन करना ;

● .... मजदूरों के सामुहिक विरोध–प्रतिरोध–संघर्ष के यह कुछ उदाहरण मात्र हैं। और असल में मजदूरों के यह कदम ही मैनेजमेन्टों को ज्यादा तीन–पाँच करने से रोकते हैं।

क्या यह चूँ–चूँ के मुरब्बे वास्तव में मैनेजमेन्टों के, सरकारों के गलों में फन्दे तो नहीं हैं? मजदूरों की रिसर्च–खोज–अन्वेषण–आविष्कार–रचना–सृजन ही सही उत्तर दे सकते हैं। और तब तक अपने छोटे से छोटे से सामुहिक कदम की जानकारी तथा उससे प्राप्त अनुभव को आइये एक–दूसरे के साथ बाँटें। इस अखबार को भी इस आदान–प्रदान का एक जरिया बनायें।■

हो सा - हाँ जी (पेज एक का शेष)

मैडम ही कहना चाहिये। सार में नहीं पर विस्तार में संविधान की कथनी और करनी में जितना अन्तर है वही मजदूर का आदर्श होना चाहिए। मजदूर की हाँ का मतलब ना नहीं होगा तो वह अपने हितों के साथ गद्दारी करेगा, अपने कष्ट बढायेगा।

हमारे लाख न चाहने के बावजूद मैनेजमेन्टें बड़ी मात्रा में एक–एक करके हमें जोर आजमाने की चुनौती देती रहती हैं। निजी विरोध–प्रतिरोध हर वरकर की रोजमर्रा की अनिवार्य आवश्यकता है, मजबूरी है। ऐसे में जँगल के गरीबों की "हो सा" दिशा सूचक है। **मैनेजमेन्टों की फैलती व कसती जकड़ के हालात में हाँ का अर्थ नहीं हो इसके लिये प्रत्येक मजदूर को नये-नये रंग धारण करने तथा नित नई रचना करने-क्रियेटिव होने का अभ्यस्त होना पड़ता है और यह एक अच्छी बात है।**■

सामुहिक की झलक

छुट्टियों के बदले काम करने के जनवरी में दिये जाने वाले पैसे **ईस्ट इंडिया कॉटन मिल** मैनेजमेन्ट ने आधी अप्रैल बीत जाने तक भी नहीं दिये। 17 अप्रैल को दोपहर ढाई बजे ड्युटी से छूटे फस्ट शिफ्ट के 700 मजदूर फैक्ट्री में तीसरी मंजिल पर चेयरमैन–मैनेजिंग डायरेक्टर के दफ्तर पहुँचे। बड़े साहब नदारद पर उनके परिवार के सदस्य वहाँ बैठे थे। मजदूर दफ्तर घेर कर बैठ गये और अपने छुट्टियों के पैसे डिमान्ड किये। हरियाणा पुलिस आ गई और फिर सी आर पी। **केन्द्रीय पुलिस की धमकियों को ईस्ट इंडिया वरकरों का जवाब था : " हम तो वैसे ही मर रहे हैं बाकी तुमने जो करना है करो "**। डी सी व एस पी आ गये और आश्वासन दे कर घेरा हटाने को कहा पर मजदूरों ने इनकार कर दिया। डी सी ने पुलिस भेज कर लीडरों को बाहर से बुलवाया। नये लीडरों को भी मजदूरों ने हट जाने को कहा और स्वयं मामला हल करने पर जोर दिया। तब डी सी व एस पी ने जनरल मैनेजर तथा लीडरों के साथ मीटिंग की और 24 अप्रैल तक पैसे देने का भरोसा लीडरों से दिलवा कर मजदूरों का घेरा उठवाया। यह सब ढाई घन्टों में हुआ।

बिना किन्ही बिचौलियों के मजदूर खुद ऐसे कदम उठा कर ईस्ट इंडिया मैनेजमेन्ट की 600–700 मजदूरों की छँटनी स्कीम को फेल कर सकते हैं।■

मैनेजर गेट आउट

मजदूरों के नम्बरवाइज ग्रेड चेन्ज करने में **एस्कोर्ट्स** की **क्रेन्कशाफ्ट व हाइड्रोलिक डिवीजन** (सी एच डी) में मैनेजमेन्ट ने घपला किया। प्लाट नं. 114 सैक्टर–24 स्थित प्लान्ट में इस बारे में 16 अप्रैल को वरकरों में आपस में चर्चा हुई। 17 को मजदूरों ने मैनेजर की हूटिंग की और उसे घेरा तथा फिर स्लो डाउन किया। एस्कोर्ट्स मैनेजमेन्ट द्वारा 18 अप्रैल को तीन वरकरों का गेट रोकने पर 500 मजदूर गेट पर इकट्ठे हो गये तो मैनेजमेन्ट को उन तीन को ड्युटी पर लेना पड़ा। प्लान्ट में मजदूरों ने प्रोडक्शन जाम किया और मैनेजर को फैक्ट्री गेट से बाहर रखा। मैनेजर गेट आउट पर 19 अप्रैल को एस्कोर्ट्स मैनेजमेन्ट ने अन्य प्लान्टों से सेक्युरिटी वहाँ भेजी और पुलिस बुला ली। पुलिस को देख कर सी एच डी की बगल की एस्कोर्ट्स रेलवे डिवीजन के मजदूर भी भड़क गये। यूनियन के बड़े लीडर पहुँचे और उन्होंने सी एच डी में अपने प्रतिनिधियों को हड़काया तथा लीपापोती कर मामले को लटकता छोड़ कर प्रोडक्शन शुरु करवाया।■

इस अंक की हम पाँच हजार प्रतियाँ ही फ्री बाँट पा रहे हैं। पाँच हजार मजदूर अगर हर महीने एक-एक रुपया दें तो दस हजार प्रतियाँ फ्री बँट सकेंगी।

मनमौज बनाम नौकरी-चाकरी

मार्केट की रेलम–पेल में रेल बना एक दोस्त दस महीने बाद 18 अप्रैल को थोड़ी फुर्सत से मिला। मन्डी की जलालत से निपटने के लिये मन्डी में कार्य करने को मजबूर दोस्त द्वारा कलकत्ता में अपने चाचा की मृत्यु के विवरण में आशा की किरणें चमक रही थी, दोस्त की चेतना को रौशन कर रही थी।

परिवार के अनुसार मित्र के चाचा मिसफिट थे। बीस–पच्चीस साल पहले छात्र जीवन में उन्होंने बेहतर समाज के सपने को साकार करने के लिये जी–जान लगा दी थी परन्तु बुनियाद ही थोथी थी इसलिये अपने जैसे हजारों की तरह निराशा के गर्त में गिरे थे। डॉक्टर की डिग्री थी– सरकारी नौकरी में लग गये। हताश–निराश को हजम करने के लिये परिवार ने शादी करके पारिवारिक जाल में सात गाँठें ऊपर से लगा दी। कलह, झगड़े–झंझट, मार–पीट का सिलसिला आरम्भ हुआ। पूर्व में अपने डॉक्टर चाचा का जिक्र आने पर दोस्त अक्सर उनकी घुटन, कुन्ठा, टूटन, मानसिक रोगी हो जाने के वाकये बयान करता था। एक पीढी के सपनों के चकनाचूर हो जाने के प्रतीक बने डॉक्टर चाचा हमारी पीड़ा में इजाफा ही करते थे।

डॉक्टर चाचा की मृत्यु ने इस सब को बदल दिया है। उनकी मौत पर सार्वजनिक हुई हकीकत ने परिवार को जहाँ हक्का–बक्का किया है वहाँ हमें आशा की नई किरणें दी हैं। दोस्त ने हमें उत्साहपूर्वक बताया कि डॉक्टर चाचा ने आठ–नो साल से इनक्रीमेन्ट लेने से इनकार किया हुआ था क्योंकि इनक्रीमेन्ट लेने पर सरकारी नियमों के अनुसार उनका प्रमोशन हो जाता और वे बड़े डॉक्टर बन जाते, प्रशासनिक अधिकारी बन जाते, साहब बन जाते जैसे कि छात्र दिनों के उनके दोस्त बन गये थे। लेकिन सफलता की सीढी चढते हुये अधिक से अधिक लोगों के सिर पर बैठने को डॉक्टर चाचा इन्सानियत से बेमेल मानते थे, मानवता के खिलाफ मानते थे। साहब बनने से इनकार को उनकी सनक करार दिया गया और परिवार में कलह का यह सतत स्रोत बना। अस्पताल में ड्युटी देने भी वे हफ्ते में तीन दिन मुश्किल से जाते थे। अधिकारियों ने उस सिरफिरे की ड्युटी ब्लड बैंक में लगा दी थी। अपनी हाजरी लगाने के सिवा उन्होंने सरकारी अस्पताल में शायद ही कभी कोई काम किया। और इन्हीं सनकी–सिरफिरे–कुन्ठाग्रस्त डॉक्टर चाचा की मृत्यु की सूचना मिलते ही कलकत्ता की एक उपनगरी में मार्केट के नियम फेल हो गये, मन्डी का कारोबार बन्द हो गया। श्रद्धा सुमन अर्पित करने वालों का ताँता लग गया। हजारों अपरिचित स्त्री–पुरुषों के अनन्त आवागमन से परिवार हतप्रभ! परिवार–रुपी संस्था के प्रति उनकी अवज्ञा के बावजूद परिवारजनों में डॉक्टर चाचा के प्रति गर्व उमड़ा।

कई वर्ष से डॉक्टर चाचा कलकत्ता की एक उपनगरी में घर–घर जा कर मरीजों का फ्री इलाज करते थे। सैम्पल में मिली दवाइयों और अपनी तनखा में से जो कुछ निकाल पाते थे उनसे उन्होंने यह गतिविधि आरम्भ की थी। प्रतिदिन वे उपनगरी में कई मरीजों को देखने जाते थे। आहिस्ता–आहिस्ता मेडिकल रिप्रेजेन्टिव उनके लिये सैम्पल लेबल वाली दवाइयों के जुगाड़ के विशेष प्रयास करने लगे थे। मन्डी के नियमों को तोड़ते, परिवार के आचार–विचार को ठुकराते डॉक्टर चाचा की इन सामान्य गतिविधियों की जानकारी परिवार वालों को नहीं थी। खरीद–बिक्री व भाव–तोल से परे, मन्डी के दायरे से बाहर की अनगिनत आम क्रियाओं की तरह ही डॉक्टर चाचा की यह गतिविधि थी। इसलिये यह अदृश्य थी और हमारी अन्य सामान्य क्रियाओं की तरह ही मीडिया के लिये यह न्यूज नहीं थी। एक–दूसरे के प्रति मन्डी–मार्केट के दायरे के बाहर का व्यवहार करना ही प्रियजन का अर्थ है। मन्डी और प्रियजन परस्पर विरोधी हैं फिर भी दनदनाती मन्डी के दौर में भी आज दुनियाँ में शायद ही कोई हो जिसके प्रियजन नहीं हैं। दुनियाँ में हर रोज और हर जगह प्रियजन अनगिनत सँख्या में मन्डी के नियम तोड़ते हैं।

मन्डी की महिमा है कि शव जलाने के लिये लकड़ी–दफनाने के लिये ताबूत तो खरीदने पड़ते ही हैं, रोने–छाती पीटने के लिये लोग भी किराये–भाड़े पर लेने पड़ते हैं। मन्डी की महिमा है कि जन्म ही नहीं मृत्यु भी रुपये–पैसे माँगती है। लेकिन कलकत्ता की उपनगरी में डॉक्टर चाचा की मृत्यु पर गँगा सीधी बहने लगी। उपनगरी के मोहल्लों में डॉक्टर चाचा की मृत्यु पर शोक प्रकट करते इश्तहार लोगों ने हाथ से लिख कर लगाये। मृत्यु के अगले दिन डॉक्टर चाचा की शवयात्रा में दस हजार स्त्री–पुरुष–बच्चे शामिल हुये और रास्ते के दोनों तरफ उपस्थित हो कर जन समूह ने फूल बरसाये। कलकत्ता की उपनगरी में मन्डी का चक्का उस दिन भी जाम रहा। मन्डी के जनाजे की एक जीवन्त झलक डॉक्टर चाचा की शवयात्रा ने दिखाई।

आपकी जानकारी में इस प्रकार की जितनी बातें हैं उन्हें बता कर खुशियाँ बाँटें। ऐसे शुभ समाचारों को अखबार के जरिये अधिक लोगों तक पहुँचाना हमारे लिये आनन्ददायक है।■

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं सम्पादक शेर सिंह के लिए जे० के० ऑफसैट दिल्ली से मुद्रित किया।
सौरभ लेजर टाइपसैटर्स, बी–548 नेहरु ग्राउंड, फरीदाबाद द्वारा टाइपसैट।